बाल महाभारत
कक्षा-7 विषय-हिंदी
पाठ– 25 मंत्रणा

(घनश्याम मीना)

• तेरहवाँ बरस पूरा होने पर पांडव विराट की राजधानी छोड़कर विराटराज के ही राज्य में स्थित 'उपप्लव्य' नामक नगर में जाकर रहने लगे। अज्ञातवास की अवधि पूरी हो चुकी थी। इसलिए पाँचों भाई प्रकट रूप में रहने लगे। आगे का कार्यक्रम तय करने के लिए उन्होंने अपने भाई-बंधुओं एवं मित्रों को बुलाने के लिए दूत भेजे| भाई बलराम, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा तथा पुत्र अभिमन्यु और यदुवंश के कई वीरों को लेकर श्रीकृष्ण उपप्लव्य जा पहुचे। इंद्रसेन आदि राजा अपने-अपने रथों पर चढ़कर उपप्लव्य आ पहुँचे। काशिराज और वीर शैव्य भी अपनी दो अक्षौहिणी सेना के साथ आकर युधिष्ठिर केनगर में पहुंच गए।

- सबसे पहले अभिमन्यु के साथ उत्तरा का विवाह किया गया। इसके बाद विराटराज के सभा भवन में सभी आगंतुक राजा मंत्रणा के लिए इकट्ठे गया हुए। विराट के पास श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर बैठे।
- बलराम के कहने का सार यह था कि युधिष्ठिर ने जानबूझकर अपनी इच्छा से जुआ खेलकर राज्य गँवाया था। उनकी इन बातों से यदुकुल का वीर और पांडवों का हितैषी सात्यकि आगबबूला हो उठा। उससे न रहा गया। वह उठकर कहने लगा-"बलराम जी की बातें मुझे जरा भी न्यायोचित नहीं मालूम होती। युधिष्ठिर को आग्रह करके जुआ खेलने पर विवश किया गया और खेल में कपट से हराया गया था।

- राजा द्रुपद के कह चुकने के बाद श्रीकृष्ण उठे और बोले-"सज्जनो! पांचालराज ने जो सलाह दी है वह बिलकुल ठीक है। भैया बलराम जी और मुझ पर कौरवों का जितना हक है, उतना ही पांडवों का भी है। हम यहाँ किसी का पक्षपात करने नहीं, बल्कि उत्तरा के विवाह में शामिल होने के लिए आए हैं। हम अब अपनेस्थान पर वापस चले जाएंगे। (द्रुपद की ओर देखकर) द्रुपदराज! आप सभी राजाओं में श्रेष्ठ हैं, बुद्धि एवं आयु में भी बड़े हैं। हमारे लिए तो आप आचार्य के समान हैं। धृतराष्ट्र भी आपकी बड़ी इज्जत करते हैं। द्रोण और कृपाचार्य तो आपके लड़कपन के साथी हैं। इसलिए उचित तो यही होगा कि जो कुछ दूत को समझाना-बुझाना हो, वह आप ही समझा दें और उन्हें हस्तिनापुर भेज दें। यदि इसके बाद दुर्योधन न्यायोचित रूप से संधि के लिए तैयार न हो, तो सब लोग सब तरह से तैयार हो जाएँ और हमें/भी कहला भेजें|

- अर्जुन की तरफ़ मुड़कर श्रीकृष्ण बोले-"पार्थ! सुनो! मेरे वंश के लोगे नारायण कहलाते हैं। वे बड़े साहसी और वीर भी हैं। उनकी एक भारी सेना इकट्ठी की जा सकती है। मेरी यह सेना एक तरफ़ होगी। दूसरी तरफ़ अकेला मैं रहूँगा। मेरी प्रतिज्ञा यह भी है कि युद्ध में मैं न तो हथियार श्रीकृष्ण उठाऊँगा और न ही पड़ेगा। तुम भली भाँति कृष्ण का सोच लो, तब निर्णय करो। इन दो में से जो पसंद हो, वह ले लो।“
- अर्जुन बोला-"बात यह है कि आप में वह शक्ति है कि जिससे आप अकेले ही इन तमाम राजाओं से लड़कर इन्हें कुचल सकते हैं।"

मद्र देश के राजा शल्य, नकुल-सहदेव की माँ माद्री के भाई थे। जब उन्हें यह खबर मिली कि पांडव उपप्लव्य के नगर में युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं, तो उन्होंने एक भारी सेना इकट्ठी की और उसे लेकर पांडवों की सहायता के लिए उपप्लव्य की ओर रवाना हो गए।

- मद्रराज ने कहा-"बेटा युधिष्ठिर, में धोखे आकर दुर्योधन को वचन दे बैठा। इसलिए युद्ध तो मुझे उसकी ओर से ही करना होगा। पर बात बताए देता हूँ कि कर्ण मुझे सारथी बनाएगा तो अर्जुन के प्राणों की रक्षा ही होगी।"
- उपप्लव्य में महाराज युधिष्ठिर और द्रौपदी को मद्रराज शल्य ने दिलासा दिया और कहा 'जीत उन्हीं की होती है, जो धीरज से काम लेते हैं। युधिष्ठिर! कर्ण और दुर्योधन की बुद्धि फिर गई है। अपनी दुष्टता के फलस्वरूप निश्चय ही उनका सवर्नाश होकर रहेगा |

प्रश्न–अभ्यास

- प्रश्न-1 अभिमन्यु का विवाह किसके साथ किया गया?
- उत्तर:अभिमन्यु का विवाह उत्तरा के साथ किया गया।

- प्रश्न-2 दुर्योधन और अर्जुन किस कारण श्रीकृष्ण के पास गए थे?
- उत्तर:दुर्योधन और अर्जुन दोनों ही श्रीकृष्ण के पास उनसे प्रार्थना करने गए थे कि वो उनकी युद्ध में सहायता करें।

- प्रश्न-3 तेरहवाँ बरस पूरा होने पर पांडव कहाँ जाकर रहने लगे?
- उत्तर:तेरहवाँ बरस पूरा होने पर पांडव विराट की राजधानी छोड़कर विराटराज के ही राज्य में स्थित 'उपप्लव्य' नामक नगर में जाकर रहने लगे।

- प्रश्न-4 श्रीकृष्ण किन लोगों को लेकर उपप्लव्य जा पहुँचे?
- उत्तर:भाई बलराम, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा तथा पुत्र अभिमन्यु और यदुवंश के कई वीरों को लेकर श्रीकृष्ण उपप्लव्य जा पहुचे।

- प्रश्न-5 श्रीकृष्ण की नींद खुली तो उन्होंने पहले सामने किसे देखा और क्यों?
- उत्तर:श्रीकृष्ण की नींद खुली तो उन्होंने पहले सामने अर्जुन को देखा क्योंकि दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने एक ऊचे आसन पर बैठा था और अर्जुन श्रीकृष्ण के पैताने ही हाथ जोड़े खड़े थे ।